ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

अलवर जिले में सामाजिक–आर्थिक विकास पर पर्यटन का प्रभाव

महेन्द्र जाट
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

अध्ययन क्षेत्र अलवर जिला प्राकृतिक उपहार एवं ऐतिहासिक धरोहर माना जाता है। यह जिला ऋषियों की तपोभूमि के रूप में भी विख्यात है। वस्तुतः यहां अरावली की सुरम्य पर्वत श्रेणियां है, जिनका आकर्षण पर्यटकों को युगों से अपनी ओर खींचता रहा है। दिल्ली, हरियाणा आदि समीपवर्ती राज्य होने के कारण यहाँ पर्यटन का महत्व और भी बढ गया हैं। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता भी अपनी अनोखी छटा प्रस्तुत करती है। यह जिला प्राचीन काल से ही पर्यटन का केन्द्र स्थल रहा है। अलवर में सामाजिक आर्थिक विकास पर पर्यटन का प्रभाव का अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व जो अध्ययन के उद्देश्य बनाये गये था उनको ध्यान में रखकर अध्ययन कार्य पूर्ण किया गया। अध्ययन प्रारम्भ से पूर्व जो परिकल्पना बनाई गई थी, उस परिकल्पना के अनुसार ही अध्ययन के निष्कर्ष मुझे प्राप्त हुये। प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर ही ये कहा जा सकता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यटन उद्योग का सामाजिक आर्थिक विकास पर नकारात्मक व सकारात्मक दोनों ही प्रभाव पड़ रहे हैं।

मुख्य शब्द : पर्यटन, सामाजिक–आर्थिक विकास, आधुनिक संचार, परिवहन प्रणाली, नवोदित उद्योग।

प्रस्तावना

पर्यटन मानव का प्राचीन और रूचिकर क्रियाकलापों का क्षेत्र रहा है, यह भूगोल विषय के साथ आरम्भिक काल से अनवरत रूप से जुडा हुआ है। जिसमे नये स्थानों की जानकारी ने मानव को जिज्ञासु प्रवृति के रूप में गति प्रदान की जो मानव की जीवन निर्वाह से लेकर विलासिता तक जुडी हुई है यह आज भौगोलिक अध्ययन का एक आधारभूत संरचना युक्त स्तम्भ बन गया है। जिसकी संरचना को मजबूत करने में आधुनिक संचार एवं परिवहन प्रणाली भी उपयुक्त योगदान दे रही है, इसके माध्यम से पर्यटन विश्वव्यापी हो गया है। यह कुछ स्थानों पर नवोदित उद्योग के रूप में विकसित हो चुका है। पर्यटन की वृहद सोच के साथ ही अब इसके क्षेत्र का अत्यधिक विस्तार हो रहा है। इससे क्षेत्र एवं जनसंख्या का प्रत्येक भाग लाभान्वित हो रहा है। पर्यटन, खेल, मनोरंजन, शिक्षा एवं चिकित्सा के साथ विभिन्न सम्बन्धों से युक्त हो गया है। शिक्षा प्रणाली में भी देशाटन या पर्यटन करना एक आवश्यक शोध–विधि बन गया है। जिससे किसी भी शोध विषय के अध्ययन में गुणात्मकता एवं सार्थकता की महत्ता बढ़ जाती है। पर्यटन वर्तमान एवं भावी स्वरूप व महत्व की ओर स्वतः ही इंगित करता है।

ट्यूरिज्म शब्द की उत्पत्ति टाइनस शब्द से मानी जाती है जो लेटिन भाषा के टारनस शब्द का अपभ्रंश है। जिसका तात्पर्य एक चक्र से या पहियों के घुमाने से हैं। 12 वी शताब्दी के मध्य में सर्वप्रथम पर्यटन शब्द का प्रयोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने वाली यात्रा के लिए किया गया था। यह यात्रा लगातार अनेक क्षेत्रों के लिए होती है। पर्यटन एक व्यक्ति अथवा समाज, द्वारा होने वाली आर्थिक एवं स्वभाविक प्रक्रिया है। पर्यटन के अर्थ से यह तथ्य स्पष्ट है कि पर्यटन आर्थिक सामाजिक एवं आमोद–प्रमोद जैसे क्रियाकलापों की सहभागिता का नाम है। विभिन्न स्थानों की आर्थिक प्रक्रिया, सामाजिक संरचना, भौगोलिक तथ्य, ऐतिहासिक एवं वर्तमान तथ्यों को परिभाषित करने का कार्य पर्यटन करता है।

अध्ययन क्षेत्र का चुनाव

अध्ययन क्षेत्र अलवर जिला प्राकृतिक उपहार एवं ऐतिहासिक धरोहर माना जाता है। यह जिला ऋषियों की तपोभूमि के रूप में भी विख्यात है। वस्तुतः यहां अरावली की सुरम्य पर्वत श्रेणियां है, जिनका आकर्षण पर्यटकों को

युगों से अपनी ओर खींचता रहा है। दिल्ली, हरियाणा आदि समीपवर्ती राज्य होने के कारण यहाँ पर्यटन का महत्व और भी बढ गया हैं। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता भी अपनी अनोखी छटा प्रस्तुत करती है। यह जिला प्राचीन काल से ही पर्यटन का केन्द्र स्थल रहा है, यहाँ के ऐतिहासिक स्थल आज भी अपना महत्व बनाये हुए है, लेकिन दुर्भाग्यवश अलवर जिले पर पर्यटन सम्बन्धी अध्ययन बहुत ही कम हुए है जबकि यहाँ का पर्यटन राजस्थान राज्य में अपनी महत्वपूर्ण स्थिति रखता है। व्यवसायिक आधार पर पर्यटन राज्य की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

अध्ययन क्षेत्र अलवर जिला यातायात, प्राकृतिक सौन्दर्य, जलस्त्रोतों एवं विभिन्न सुविधाओं से युक्त है और यहाँ पर्यटन की विपुल संभावनाएं विद्यमान है, यहाँ की अर्थव्यवस्था में पर्यटन की अहम भूमिका है, अतः किसी भी पर्यटन क्षेत्र की भौगोलिक जानकारी के द्वारा उस क्षेत्र की भावी पर्यटन संभावनाएं ज्ञात हो, इसी उद्देश्य को सकारात्मक स्वरूप देने के लिए शोधार्थी ने अलवर जिले को अध्ययन हेतु चयन किया है साथ ही शोधार्थी अलवर जिले का मूल निवासी भी है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य अलवर जिलें में पर्यटन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है जिससे अलवर जिले में पर्यटन विकास–कर्ता, पर्यटन योजनाओं के निर्माता, यातायात एवं परिवहन योजनाओं के निर्माता, पर्यटन तकनीकी विशेषज्ञ, प्रशंसको, पर्यटन निगम/संस्थाएं तथा अन्य सम्बन्धित व्यक्ति जो पर्यटन व्यवसाय में संलग्न है अधिक से अधिक लाभान्वित होकर पर्यटन विकास के लिए समुचित योजनाओं का निर्धारण कर सकें। इसके साथ ही इस शोध अध्ययन से यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि पर्यटन के विकास एवं विस्तार के लिए कौनसे संसाधन अधिक से अधिक जुटाने के प्रयास किये जा सकते हैं। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैः–

1. अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक एवं जनांकिकीय (Demographic) स्वरूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थलों एवं उनके ऐतिहासिक विकास एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु सरकारी प्रयासों व विभिन्न योजनाओं का अध्ययन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन का स्थानीय लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
5. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से उत्पन्न समस्याओं एवं पर्यटन के भावी विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना

1. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है।
2. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास से जंगली जानवरों के प्राकृतिक आवासों पर दबाव बढ़ रहा है।
3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास के फलस्वरूप सामाजिक गतिविधियों (चोरी, धोखाधडी, भिक्षावृति) में वृद्धि हो रही है।

विधि तंत्र

किसी भी शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए एक उपयुक्त शोध विधि बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। जिसके द्वारा शोधकार्य को सम्पन्न किया जाता है प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भी शोधविधि अपनायी गयी है जिसमें प्राथमिक व द्वितीय स्तर के आंकड़ों का उपयोग उपयुक्त तालिकाओं द्वारा किया गया है। इसी के साथ मानचित्रों, आरेखों एवं विभिन्न गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अलवर जिले की प्रत्येक तहसील के आंकडों तथा पर्यटन स्थलों के अनुसार आंकड़ों का संकलन किया गया है।

1. पर्यटन स्थलों के संरचनात्मक विश्लेषण के लिए कई धरातलीय मानचित्रों का उपयोग किया गया है।
2. पर्यटन के विकास के लिए सम्भावित कार्यो, का आंकलन किया गया है तथा उनके विकास को इंगित किया है।
3. पर्यटन सम्बन्धी प्राचीन स्थलों के ऐतिहासिक अध्ययन को भौगोलिक दृष्टि से भी देखा गया है।
4. स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटन के लिए अनेक स्थानों पर सर्वेक्षण द्वारा प्राथमिक आंकड़ो का संकलन कर अध्ययन की सत्यता की जांच की गई है।
5. प्राप्त द्वितीय आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न आनुभाविक व सांख्यिकीय विधियों को अपनाया गया है।
6. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रतीकात्मक अध्ययन के लिए चयनित पर्यटन स्थलों का सम्पूर्ण अध्ययन किया गया है।

साहित्य का पुनरावलोकन

पर्यटन विषय से सम्बन्धित पर्यटन विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों, यातायातविदों एवं पर्यटन नियोजकों ने अपने–अपने ढंग से शोधकार्य किये हैं इस विषय पर उन्होंने क्रमबद्ध अध्ययन किये हैं जिनमें कुछ जिला स्तर के तो कुछ राष्ट्रीय स्तर के रहे हैं कुछ अध्ययन विश्व स्तर के भी रहे हैं भूगोलविदों द्वारा पर्यटन के अन्तर्गत क्रमबद्ध व वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन की प्रारम्भिक शुरूआत 20 वीं सदी के प्रारम्भ से हुई है। कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों का स्वरूप निम्नानुसार हैः– भारत में पर्यटन पर सर्वप्रथम शोध कार्य करने वाले आर.के. मुखर्जी 1970 है जिन्होंनें अपनी पुस्तक ''प्राचीन सभ्यता का इतिहास'' में भारत की प्राचीन सभ्यता के स्थानों में पर्यटन के महत्त्व को बतलाया है।

एन.के. वर्मा 2010 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म केरियर'' में बताया कि ट्रेवल व पर्यटन में व्यक्ति अपना केरियर बना सकता है, होटल मैनेजमेंट का कोर्स करके नई पीढ़ी ट्रेवल एजेंसियों से जुड़कर अपना केरियर बना सकती है।

एन.के. वर्मा 2010 ने अपनी पुस्तक ''एच.आर.एम. इन ट्यूरिज्म इण्डस्ट्रीज'' में होटल प्रबन्धन पर प्रकाश डाला। एक संगठन तथा उसकी एजेंसियों तथा उप विभागों आदि के द्वारा एक निष्चित उद्देश्यों पर पहुंचा जा

सकता है। गेस्ट की संतुष्टि व मनोरंजन, व्यवसाय तथा प्रबंधन केटरिंग उद्योग पर वर्णन किया।

के.एस. नागापथी 2011 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म डवल्पमेंट, ए न्यू अपरोच'' पर्यटन का अर्थ, पर्यटन के प्रकार, हेरिटेज होटल, ट्रेवल एण्ड ट्यूर ऑपरेट्स, ट्यूरिज्म प्लानिंग व विकास पर काफी प्रकाश डाला है।

डॉ. रेणु कथुरिया, 2011 ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन विकास'' ने बताया कि समुचे विकासशील उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में संरक्षित क्षेत्र प्रबन्धकों और स्थानीय समुदायों को आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षण की आवश्यकता के बीच संतुलन कायम करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्यावरण पर्यटन भी एक महत्वपूर्ण संतुलन का पक्ष है।

अशोक मनोरम 2012 ने अपनी पुस्तक ''रिसर्च मेथड्स फॉर ट्रेवल एण्ड ट्यूरिज्म'' में रिसर्च मेथड्स परिभाषित किया तथा मात्रात्मक व गुणात्मक रिसर्च को महत्त्व दिया। पर्यटन व ट्रेवल पर रिसर्च प्लान दिये।

अतुल शर्मा, 2012 ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन भूगोल'' में पर्यटन एवं भूगोल में सम्बन्ध बताये, पर्यटन भौगोलिक प्रकृति का एक भाग है और यह उसकी छाया में ही पनपता है आदि को स्पष्ट किया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार की दृष्टि से अलवर जिले की ग्लोबीय स्थिति $27^0 41'$ से $28^0 4'$ उत्तरी और $76^0 07'$ से $77^0 13'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य हैं, जिले का उतर–दक्षिणी विस्तार 137 किलोमीटर जबकि पूर्व–पष्चिम दिषा में 110 किलोमीटर है अर्थात इसकी लम्बाई, चौडाई से अधिक है। जिले का आकार एक खडे आयत के समान है। इसकी उत्तरी–पूर्वी सीमा हरियाणा राज्य के मेवात व महेन्द्रगढ़ जिले से तथा पूर्वी व दक्षिणी पूर्वी सीमा राजस्थान के भरतपुर जिले से लगती हैं, जबकि पष्चिम में जयपुर व दक्षिण में दौसा जिले से सीमा लगती हैं। अलवर जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 8380 वर्ग किलोमीटर है जो राज्य के क्षेत्रफल के 2.44 प्रतिषत के अनुसार 17वां स्थान रखता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 3674179 है जिनमें पुरूष 1939026 तथा 1735153 स्त्रियाँ है ।

अध्ययन क्षेत्र पर पर्यटन का प्रभाव

वर्तमान समय में पर्यटन एक उद्योग का दर्जा प्राप्त कर चुका है। जिससे एक और जहां बहुत से उद्योगों को मदद मिलती है तो दूसरी और विश्व के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था भी पर्यटन उद्योग पर निर्भर करती है। साथ ही जीवन स्तर को बेहतर बनाने में भी पर्यटन विशेष रूप से सहायक है। अतः कहा जा सकता है कि पर्यटन आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में अपने विशिष्ट प्रभाव डाल रहा है।

विश्व के सबसे तेज बढ़ने वाले पर्यटन उद्योग के सभी स्तरों पर पड़ने वाले प्रभाव अधिक लाभकारी है तो हानिकारक भी कम नहीं है। जैसे जैसे पर्यटन उद्योग की वैश्विक पहचान बनी है वैसे–वैसे ही इसके प्रभाव भी विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग रूप से उभरकर सामने आने लगे हैं। कभी भ्रमण की लालसा के लिए, तो कभी तीर्थाटन से मनोकामना पूर्ति के लिए या फिर व्यापार के लिए विदेश गमन तक का सफर तय करता पर्यटन अब जीवन का अंग बन गया है। बहुआयामी होते पर्यटन ने जिस तेजी से रफ्तार पकड़ी है, उसी तेजी से इसके प्रभाव लगभग सभी क्षेत्रों में पड़े हैं समाज, अर्थव्यवस्था राजनीति, पर्यावरण, संस्कृति आदि पर कैसे पर्यटन अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालता है, इसे जानकर और समझकर ही पर्यटन के बेहतर क्रियान्वयन को सही रूप में परिणत किया जा सकता है।

आमतौर पर पर्यटन को सैर–सपाटे की गतिविधियों तक ही सीमित करने की हम भूल कर बैठते हैं। यह सही है कि पर्यटन सैर–सपाटे से सम्बन्धित उद्योग है परन्तु इतना सच है कि इसकी सीमाओं को भ्रमण तक ही नहीं बांधा जा सकता। आज सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक पर्यावरण आदि सभी स्तरों पर पर्यटन का प्रभाव पड़ रहा है। अध्ययन क्षेत्र पर पर्यटन के प्रभावों का आंकलन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है–

1. सामाजिक प्रभाव
2. आर्थिक प्रभाव
3. पर्यावरणीय प्रभाव

21वीं शताब्दी के वृहदत्तम गतिशील उद्योगों में पर्यटन उद्योग विश्व का सबसे तेज गति से विकास करने वाला सेवा क्षेत्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग है। आधुनिक युग की विविध आर्थिक एवं औद्योगिक गतिविधियों में पर्यटन उद्योग सबसे नवीनतम प्रदूषण रहित एवं महत्वपूर्ण उद्योग है। 1980 के दशक से ही पर्यटन एक उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है। पर्यटन को आधुनिक युग में अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द, संवर्द्धन, विश्व बंधुत्व की भावना, पारम्परिक समन्वय एवं सांस्कृतिक आदान प्रदान का भी महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। अलवर के साथ ही हमारे समाज व संस्कृति के विस्तार में भी पर्यटन–उद्योग की महती भूमि का है। पर्यटन उद्योग विदेशी मुद्रा अर्जन व रोजगार सृजन करने के दृष्टिकोण से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

जिस कारण अलवर जिला भारत में ही नहीं अपितु विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अलवर के सामाजिक आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का विशेष योगदान है। राजस्थान में आने वाले विदेशी पर्यटकों में से 25 प्रतिशत पर्यटकों द्वारा अलवर जिले का दृश्यावलोकन किया जाता है। विगत दशक में जिले में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन की संख्या दुगुनी से भी अधिक हो गयी है। इन पर्यटकों में से अधिकांश प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्यावलोकन में रूचि रखते हैं, जिनके द्वारा अलवर के विश्वविख्यात राष्ट्रीय उद्यान सरिस्का का भी अवलोकन किया जाता है। अलवर के ऐतिहासिक स्थल, कलात्मक कारीगरी हस्तकला, हस्तशिल्प, वन्यजीवों की विविधता व विश्व प्रसिद्ध मन्दिर आदि के कारण पर्यटकों के लिए अनूठा आकर्षण बन गया है। यहां का नैसर्गिक सौन्दर्य अपने आप में अद्भुत है। जिनके कारण अलवर में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की समस्या

अलवर जिले में पर्याप्त ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों की स्थिति के बावजूद अलवर में पर्यटन विकास का उच्च स्तर प्राप्त नहीं हुआ। राजस्थान में अन्य पर्यटन स्थलों की तुलना में अलवर में पर्यटन की सम्भावनाएं अधिक है। किन्तु क्षेत्र में कुछ समस्याऐं ऐसी है जो पर्यटन विकास में बाधक है–

इनमें पर्यटन स्थलों पर स्थानीय समुदायों, प्रशासन और पर्यटकों के बीच समन्वय का नहीं होना, स्थानीय लोगों का पर्यटन के प्रति जागरूकत नहीं होना आदि बहुत से ऐसे पहलू है जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में पर्यटन को बाधित करते हैं।

अलवर जिले में पर्यटन विकास के सम्मुख प्रमुख समस्याओं को खोजने का प्रयास किया गया। जिसमें निम्न समस्याये सामने आई–

1. आमजन की उदासीनता
2. जन अपराध
3. असंतोष, हड़ताल एवं आंदोलन
4. यौन उत्पीड़न
5. प्रशासनिक समन्वय का अभाव
6. शिक्षण–प्रशिक्षण की अपर्याप्ता
7. विमान सेवाओं एवं सुविधाओं की अपर्याप्ता
8. पेशेवर अकुशलता एवं अन्य बाधाए

निष्कर्ष

उपर्युक्त तीनों पर्यटन स्थलों पर से साक्षात्कार प्रश्नावली व वार्तालापों में देशी व विदेशी पर्यटकों, स्थानीय ग्रामीणों, पर्यटन व्यवसाय में कार्यरत कर्मचारियों तथा पर्यटन स्थलों के आसपास के दुकानदारों व यातायात व्यवस्था में कार्यरत लोगों को शामिल कर शोध प्रबंध को सार्थक व वास्तविक बनाने का पूर्ण प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। इस हेतु शोध में सम्मिलित लोगों द्वारा प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है–

1. अध्ययन में अधिकतम 21–35 आयु के पर्यटक उत्तरदाता सर्वाधिक है, जिसमें 60 स्वदेशी पर्यटक है तथा 40 विदेशी पर्यटक उत्तरदाता है तथा 81 से अधिकतम आयु के मात्र 2 विदेशी उत्तरदाता पर्यटक है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि घर से बाहर निकल कर पर्यटन करने के लिए उम्र एक बड़ा कारक होती है।
2. अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि पर्यटन को बढ़ावा देने में आय का सीधा संबंध है। आय में वृद्धि पर्यटन में व्यक्ति की रूचि को बढ़ाती है।
3. अध्ययन में अधिकांश नौकरी पेशा व्यक्तियों में घूमने की प्रकृति को देखा गया। निश्चित आय, तथा छुट्टियों का मिलना पर्यटन की प्रवृत्ति में इजाफा लाता है। व्यापार या फिर स्वरोजगार में लगे लोगों की श्रेणी में पर्यटन के प्रति रूझान कम पाया गया क्योंकि यदि वे घूमने चले जाते हैं तो उनके काम का नुकसान होता है। आज सरकार द्वारा तथा बड़ी–बड़ी कम्पनियों द्वारा भी घूमने जाने के लिए कर्मचारियों को समय–समय पर सुविधाएं प्रदान की जाती है।
4. 43.05 प्रतिशत स्वदेशी पर्यटक तथा 61 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों का मानना है कि अलवर आने से पहले उन्हें यहां की जानकारी नहीं थी।
5. जानकारी के स्त्रोतों की बात की जावें तो आज के इस युग में जहां हर घर में कम्प्यूटर उपलब्ध है, वहां व्यक्ति स्थान के चुनाव से लेकर बुकिंग तथा वहां पहुंचने तक की सारी जानकारी इन्टरनेट के माध्यम से ले लेता है। क्योंकि इन्टरनेट पर जो जानकारी होती है वह विभाग द्वारा तैयार तथ्यों के आधार पर सटीक व संपूर्ण होती है।

सुझाव

1. पर्यटन में शोध व अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिए।
2. अलवर जिले में निजी क्षेत्र द्वारा होटलों व रेस्टोरेंट की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. पर्यटन कर्मचारियों को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
4. आन्तरिक पर्यटकों की संख्या बढ़ाने एवं युवाओं में पर्यटन प्रकृति को बढ़ावा देने के लिए विशेष टूर पैकेज, सम्मेलन, उत्सव, मेलों आदि का आयोजन करना चाहिए।
5. अध्ययन में पाया है कि शहर में उतरते ही भिखारियों और लपकों का पर्यटकों पर झपट पड़ना पर्यटन उद्योग पर विपरित प्रभाव डालता है, जिन्हें दूर करना चाहिए।
6. मानवीय संसाधनों को प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए। इस हेतु होटलों, पर्यटन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाये।
7. ग्राहकों को त्वरित एवं कुशल सेवा प्रदान करने के लिए होटल को आधुनिक साज–सज्जा से संपन्न बनाना चाहिए ताकि पर्यटक सेवा से संतुष्ट हो सकें।
8. विद्युत एवं पेयजल की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए।
9. विभिन्न तहसीलों, जिलों व क्षेत्रों के बीच इस प्रकार का समन्वय होना चाहिए कि पर्यटक संपूर्ण क्षेत्र का दौरा कर सके और पर्यटन क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए अपनी यात्रा पूर्ण कर सके।
10. बैंकों के पास विदेश मुद्रा को परिवर्तित करने की सुविधा होनी चाहिए।
11. पर्यटन स्थलों पर टेलीफोन के साथ–साथ फैक्स, इन्टरनेट की सुविधा भी होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *न्यू ट्रेड पॉलिसी 2008 से 2012 भारत सरकार।*
2. *प्रगति प्रतिवेदन पत्रिकाएं राज दी हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान, राजस्थान ट्यूरिज्म, आरटीडीसी, जयपुर, 2012*
3. *आहिर्नी, एम.जे., (2000) ''द सोशियल इफैक्ट ऑफ ट्यूरिज्म, न्यूयार्क।*
4. *पर्यटन नीति, पर्यटन कला, संस्कृति विभाग, जयपुर, 2012–2013, 2014–15*
5. *राजस्थान पर्यटन ''उपलब्धियों के वर्ष ''पर्यटन विभाग, जयपुर 2012*

6. *दी हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान, राजस्थान ट्यूरिज्म आरटीडीसी, जयपुर 2011–2014*
7. *सुजस, सूचना व जनसंचार मंत्रालय द्वारा, जयपुर 2010*
8. *पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोसर्स 2011–12, 2012–13, 2014–15*
9. *जिला गजेटियर राजस्थान : निदेशक जिला गजेटियर सचिवालय, राजस्थान*
10. *शर्मा जे.पी. : प्रायोगिक भूगोल रस्तोगी एण्ड कंपनी मेरठ*
11. *बनर्जी रमेश चन्द्र अकादमी जयपुर : उपाध्याय दयाशंकर मौसम विज्ञान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।*
12. *शर्मा एच.एस. : राजस्थान का भूगोल पंचशील प्रकाशन जयपुर*